

डॉ. गैरी येट्स, 12 की पुस्तक, सत्र 8, आमोस, राष्ट्रों पर न्याय

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स द्वारा लघु भविष्यवक्ताओं पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 8 है, राष्ट्रों पर न्याय।

आमोस अध्याय एक और दो। आमोस की पुस्तक के हमारे अध्ययन में अब तक, हमने पुस्तक के प्रमुख विषयों और धर्मशास्त्र पर एक नज़र डाली है।

मैं इस पाठ में शुरुआत करना चाहता हूँ, पुस्तक के माध्यम से थोड़ा और व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ना चाहता हूँ। याद रखें कि भविष्यवक्ताओं के मुख्य योगदानों में से एक यह है कि वे चुनौती देते हैं, वे विस्तार करते हैं, और वे हमारी समझ और ईश्वर के बारे में हमारे दृष्टिकोण का विस्तार करते हैं। खास तौर पर हमारी संस्कृति में जो केवल ऐसे ईश्वर को देखना चाहती है जो प्रेम, स्वीकृति और क्षमा है।

हमें भविष्यवक्ताओं में परमेश्वर के दूसरे पहलू, उसके क्रोध, उसकी पवित्रता, उसके क्रोध और परमेश्वर के चरित्र के दोनों पहलुओं की याद दिलाई जाती है, जिन पर पुराने नियम और नए नियम दोनों में जोर दिया गया है। परमेश्वर के पवित्र परमेश्वर होने का यह विचार सिर्फ पुराने नियम में ही नहीं है। हमें नए नियम में भी इसकी याद दिलाई गई है।

1 पतरस की पुस्तक हमें निर्देश देती है, पवित्र बनो क्योंकि मैं आज परमेश्वर के लोगों के लिए पवित्र हूँ, उसी तरह जैसे मूसा ने इस्राएल के लोगों और लैव्यव्यवस्था को यह निर्देश दिया था। इब्रानियों ने हमें याद दिलाया है कि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक उपदेश हमें याद दिलाता है कि अतीत में अज्ञानता के समय में, पुराने नियम के युग के दौरान, परमेश्वर ने लोगों की अज्ञानता को अनदेखा कर दिया था।

लेकिन अब वह यीशु की मृत्यु और अपने बेटे के रहस्योद्घाटन के प्रकाश में आज्ञा देता है, वह सभी लोगों को पश्चाताप करने की आज्ञा देता है। इसलिए कभी-कभी, हमारे मन में यह विचार आता है कि पुराने नियम का परमेश्वर नए नियम के परमेश्वर से ज़्यादा कठोर, ज़्यादा क्रोधित और ज़्यादा धार्मिक है। कुछ मायनों में, हम देख सकते हैं कि नए नियम का परमेश्वर और भी ज़्यादा माँग करने वाला है।

लेकिन आमोस में, हम परमेश्वर के बारे में इस आरंभिक कथन से शुरू करते हैं। प्रभु सिय्योन से दहाड़ता है, और वह यरूशलेम से अपनी आवाज़ सुनाता है। वह एक दहाड़ता हुआ शेर है, और वह एक गरजता हुआ तूफ़ान है।

वह कथन और ईश्वर की वे छवियाँ मुझे कई साल पहले एनी डिलार्ड के एक कथन की याद दिलाती हैं जिसे मैं पढ़ना चाहूँगा, जो हमें ईश्वर की शक्ति, विस्मय और महानता की याद दिलाता है। वह कहती है, क्या किसी को भी इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा है कि हम किस तरह की शक्ति

का आह्वान करते हैं? या, जैसा कि मुझे संदेह है, क्या कोई भी इसके एक शब्द पर विश्वास नहीं करता? चर्च ऐसे बच्चे हैं जो रविवार की सुबह को खत्म करने के लिए केमिस्ट्री सेट के साथ फर्श पर खेल रहे हैं, टीएनटी का एक बैच मिला रहे हैं। चर्च में महिलाओं की स्ट्रॉ हैट और मखमली टोपी पहनना पागलपन है।

हम सभी को दुर्घटना हेलमेट पहनना चाहिए। अशर को जीवन रक्षक और सिग्नल फ्लेयर्स जारी करने चाहिए। उन्हें हमें अपनी सीटों पर बांध देना चाहिए।

क्योंकि सोता हुआ परमेश्वर किसी दिन जाग सकता है और नाराज़ हो सकता है या जागता हुआ परमेश्वर हमें वहाँ खींच सकता है जहाँ हम कभी वापस नहीं आ सकते। और मुझे लगता है कि आमोस की किताब में यही चल रहा है। आमोस इस्राएल के लोगों को याद दिला रहा है कि सोता हुआ परमेश्वर जागने वाला है।

और जिस ईश्वर को उन्होंने हल्के में लिया है, वह वास्तव में गरजते हुए तूफ़ान में दहाड़ते हुए शेर की तरह है। जैसे-जैसे हम आमोस की पुस्तक के माध्यम से व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ते हैं, मुझे लगता है कि आधुनिक पाठकों को भविष्यवक्ताओं के साथ संघर्ष और समस्याओं में से एक यह है कि कभी-कभी वे इन पुस्तकों के क्रम, संरचना और कालक्रम का पता लगाने की कोशिश करते हैं। एक लेखक ने टिप्पणी की है कि यशायाह, यिर्मयाह और यहेजकेल जैसी पुस्तकों के साथ हमारी समस्या यह है कि वे आधुनिक अर्थों में पुस्तकों के रूप में नहीं पढ़ी जाती हैं।

शुरुआत में हमें दिशा दिखाने के लिए विषय-सूची नहीं है। ये उन किताबों की तरह नहीं हैं जिन्हें मैं अपने किंडल पर पढ़ता हूँ, जहाँ मेरे पास छोटे-छोटे अच्छे साफ-सुथरे खंड होते हैं। वे स्पष्ट कालक्रम का पालन नहीं करते हैं।

और शायद हम एक भविष्यवाणी की किताब के सबसे करीब की कल्पना कर सकते हैं, वह है एक पादरी जिसने 30 या 40 साल तक चर्च में सेवा की हो या उपदेश दिया हो और कोई व्यक्ति उन संदेशों का संकलन संकलित कर रहा हो। और हमेशा उन्हें कालक्रम या पादरी की सेवा की अवधि या समय के अनुसार व्यवस्थित नहीं किया जाता है, बल्कि बस उन्हें एक अजीब तरीके से एक साथ जोड़ दिया जाता है। और यही वह चीज है जो हमें अक्सर भविष्यवक्ताओं में दिखाई देती है।

आमोस के साथ, हमारे पास दस साल की सेवकाई हो सकती है, जिसे शायद नौ अध्यायों के संकलन में संक्षेपित किया जा सकता है। मार्टिन लूथर, जिस तरह से केवल लूथर ही यह कह सकता था, भविष्यवक्ताओं के बारे में यह टिप्पणी करता है। वह कहता है कि भविष्यवक्ताओं के बात करने का तरीका अजीब है।

ऐसे लोग जो व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ने के बजाय एक बात से दूसरी बात पर इस तरह से आगे बढ़ते हैं कि आप समझ ही नहीं पाते कि वे क्या कहना चाहते हैं। और मेरे छात्र अक्सर, जब हम परीक्षा में भविष्यवाणी वाली किताबों से निपट रहे होते हैं, तो परीक्षा खत्म होने पर उसी भावना को मेरे सामने दोहराते हैं। तो, हम भविष्यवाणी वाली किताब की संरचना कैसे करते हैं?

हम इसे कैसे क्रमबद्ध करते हैं? हम व्यवस्था को कैसे पहचानते हैं? यह अक्सर एक चुनौती होती है।

मुझे लगता है कि आमोस की पुस्तक में, हालांकि, एक काफी स्पष्ट संरचना है। और मैं इस पुस्तक को तीन खंडों में देखने जा रहा हूँ। अध्याय एक और दो राष्ट्रों के बारे में परमेश्वर के न्याय से निपटने जा रहे हैं।

हम देखते हैं कि परमेश्वर आठ अलग-अलग राष्ट्रों से निपट रहा है और उन लोगों के प्रति परमेश्वर का न्याय है। उस भाग में न्याय परमेश्वर के लोगों के साथ समाप्त होता है: सबसे पहले, यहूदा, दक्षिणी राज्य, और फिर इस्राएल, उत्तरी राज्य।

यह अध्याय एक और दो है। अध्याय तीन से छह में, हमारे पास इस्राएल के न्याय पर विस्तृत चिंतन और व्याख्या है। और हमें एक अनुस्मारक और एक स्पष्टीकरण मिलता है कि परमेश्वर अपने लोगों का न्याय क्यों कर रहा है।

हमें चेतावनी मिल गई है कि यह निर्णय कितना गंभीर और गंभीर होने वाला है। यह निर्वासन होगा। यह एक सैन्य पराजय होगी।

इस्राएल एक ऐसे अवशेष की तरह होगा जिसे शेर के मुँह से निकाला गया है। नब्बे प्रतिशत लोग या तो मर जाएँगे या निर्वासन में ले जाए जाएँगे। और इसलिए, यह न्याय की तस्वीर को विस्तृत करता है।

लेकिन जबकि न्याय आ रहा है और जबकि संभावना और संभावना है कि ऐसा ही होने वाला है, परमेश्वर अभी भी लोगों को पश्चाताप करने का अवसर दे रहा है। और इसलिए, विशेष रूप से अध्याय पाँच में, सकारात्मक प्रेरणा के साथ पश्चाताप करने के लिए कई आह्वान हैं: यदि आप पश्चाताप करते हैं तो परमेश्वर आपके लिए यही करेगा। न्याय से बचा जा सकता है, लेकिन यदि आप पश्चाताप नहीं करते हैं, तो यह आपदा और विपत्ति है जिसे परमेश्वर आप पर लाने जा रहा है।

इसलिए, आमोस कहेगा, प्रभु की खोज करो और जीवित रहो। भलाई की खोज करो और जो सही है वही करो। न्याय को नदी की तरह बहने दो।

यदि आप ऐसा करेंगे, तो संभावना है कि इस भयानक न्याय से बचा जा सकता है। अंत में, अध्याय सात से नौ में, हमारे पास पाँच दर्शनों की एक श्रृंखला है। अक्सर, परमेश्वर भविष्य या संदेश प्रकट करता था जिसे उसने भविष्यवक्ता को लोगों को एक दृश्य तरीके से संप्रेषित करने के लिए कहा था, जबकि भविष्यवक्ता वास्तव में एक दर्शन देखता था जिसे अक्सर प्रतीकात्मक तरीके से चित्रित किया जाता था।

और उस दर्शन में मौजूद छवियाँ वह संदेश देंगी जो पैगम्बर को लोगों को बताना था। और इसलिए, हमारे पास उनमें से पाँच की एक श्रृंखला है। वे न्याय से संबंधित हैं।

वे अध्याय नौ में दर्शन के साथ समाप्त होते हैं जो इस्राएल के न्याय को भूकंप के रूप में चित्रित करता है जो मंदिर और पवित्र स्थान को नष्ट कर देता है जो परमेश्वर के लोगों और इस्राएल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है। मुझे लगता है कि यह पुस्तक के अंत का एक बहुत ही प्रभावी तरीका है क्योंकि, याद रखें, आमोस 1:2 हमें बताता है कि भूकंप से दो साल पहले आमोस ने इस्राएल में सेवा की थी। लोगों पर परमेश्वर द्वारा भेजा गया भूकंप आने वाले न्याय की चेतावनी थी।

इसलिए, अंतिम दर्शन में ईश्वर के इस विचार को तूफान, भूकंप के विचार के रूप में लिया गया है, और यह इज़राइल को एक अभयारण्य या एक मंदिर के रूप में चित्रित करता है जो ढह रहा है, और ईश्वर का न्याय आने वाला है। उन पाँच दर्शनों के बीच में, एक कथात्मक भाग है। कथात्मक भाग आमोस के आह्वान और आमोस के संदेश के प्रति इज़राइल के लोगों की प्रतिक्रिया से संबंधित है, जो पुजारी अमाज़िया के शब्दों में परिलक्षित होता है, जो आमोस को यहूदा वापस जाने, उपदेश देना बंद करने, राजा के अभयारण्य के खिलाफ़ बोलना बंद करने का आदेश देता है।

और यह तथ्य कि इस्राएल इस संदेश को अस्वीकार करता है, यह तथ्य कि नेतृत्व आमोस जो कहने जा रहा है उसके विरोध में खड़ा है, अंततः यही कारण है कि परमेश्वर न्याय लाएगा। आमोस अध्याय 9, श्लोक 11 से 15 का अंतिम भाग एक परिशिष्ट है जो आशा का संदेश देता है कि इस न्याय के समाप्त होने के बाद, परमेश्वर इस्राएल के लोगों को पुनर्स्थापित करने जा रहा है। यह केवल उत्तरी राज्य के न्याय से परे दिखता है।

यह दाऊद के घराने के पतन के बारे में बात करता है। और इसलिए, यहूदा भी इस न्याय का अनुभव करने जा रहा है। लेकिन एक बार जब न्याय आ गया है, तो एक बहाली होने जा रही है जहाँ इस्राएल सुरक्षित रूप से भूमि पर स्थापित हो जाएगा।

परमेश्वर दाऊद के राजवंश को भी पुनः स्थापित करेगा। और परमेश्वर अपने लोगों पर वे आशीर्ष बरसाएगा जो उसने वाचा में उन्हें देने का वादा किया था। तो यही आमोस की संरचना है।

हम अध्याय 1 से 2, 3 से 6, 7 से 9 को देखने जा रहे हैं। मैं इस खंड को देखकर शुरू करना चाहूँगा, अध्याय 1 से 2 में पुस्तक का आरंभिक खंड, जहाँ आमोस ने राष्ट्रों के लिए परमेश्वर के न्याय को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इन पहले दो अध्यायों में जो बात हमें प्रभावित करती है, वह यह याद दिलाना है कि परमेश्वर केवल इस्राएल का परमेश्वर नहीं है। वह केवल यहूदा का परमेश्वर नहीं है।

वह सिर्फ़ अपने चुने हुए लोगों का ईश्वर नहीं है, बल्कि वह सभी राष्ट्रों का प्रभु और प्रभु है। और इससे उसे उन राष्ट्रों का न्याय करने का अधिकार और अधिकार मिलता है। मेरा मानना है कि यह इसराइल के एकेश्वरवादी विश्वास का स्पष्ट प्रतिबिंब है।

वे यह नहीं मानते कि इन लोगों के दूसरे देवताओं के पास राष्ट्रों पर शासन और अधिकार है। यही, इस्राएल का परमेश्वर, एकमात्र सच्चा परमेश्वर, अंततः सभी राष्ट्रों का न्याय करता है, और सभी लोग उसके प्रति जवाबदेह हैं। यह एक आश्चर्यजनक बात है।

इजराइल एक छोटा सा राज्य है, जिसका आकार कभी-कभी न्यू जर्सी राज्य जितना होता है। यह उस तरह के क्षेत्र पर कब्जा करता है। और फिर भी इन लोगों का यह दुस्साहसिक विश्वास और दिखावा है कि उनका ईश्वर सभी राष्ट्रों का न्यायाधीश है।

अश्वर के देवता जो इतने शक्तिशाली प्रतीत होते हैं, वे वे नहीं हैं जिनके प्रति राष्ट्र जवाबदेह हैं। राष्ट्र प्रभु के प्रति जवाबदेह हैं। और इसलिए, अश्वर के देवता, मिस्रियों के देवता, बेबीलोनियों के देवता, वे देवता यहोवा की तुलना में कुछ भी नहीं हैं क्योंकि यहोवा अंततः न्यायाधीश है।

हमारे लिए यह भी दिलचस्प है कि हम यहाँ पाए जाने वाले आठ न्याय भाषणों की व्यवस्था पर ध्यान दें। मुझे लगता है कि यहाँ भविष्यवक्ता ने बयानबाजी का बहुत ही कुशल उपयोग दर्शाया है। अरस्तू ने कहा कि अच्छे संचार और अच्छे भाषण की कुंजी में लोगो, पाथोस और लोकाचार शामिल हैं।

पैगम्बरों के पास निश्चित रूप से एक शक्तिशाली लोकाचार है। यह टोरा है और यह ईश्वर का रहस्योद्घाटन और ईश्वर की पवित्रता है। उनके पास निश्चित रूप से करुणा है क्योंकि वे अपने संदेश की तात्कालिकता के कारण जोश के साथ बोलते हैं।

लेकिन वे अपने संदेश को संप्रेषित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि लोग स्पष्ट रूप से सुन सकें कि वे क्या कहना चाह रहे थे, लोगो की बयानबाजी का भी उपयोग करते हैं। भविष्यवक्ताओं को भी वही समस्या थी जो रविवार की सुबह पादरी के रूप में हममें से कई लोगों को होती है। जिन लोगों से हम बात कर रहे हैं, उन्होंने यह सब पहले भी कई बार सुना है।

और हम कभी-कभी रविवार की सुबह देखते हैं कि वे हमेशा ऊर्जावान श्रोता नहीं होते। खैर, भविष्यवक्ताओं के साथ भी यही समस्या थी। लोग एलिय्याह और एलीशा के समय से ही न्याय की भविष्यवाणियों की चेतावनियाँ और पश्चाताप के लिए आह्वान सुनते आ रहे थे।

मैं इन लोगों को कैसे सुनाऊँ? और अक्सर, मुझे लगता है कि भविष्यवक्ताओं ने इस बात पर महत्वपूर्ण ध्यान दिया कि हम इस संदेश को कैसे संप्रेषित करते हैं, जितना कि उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया कि वे संदेश का मूल सार क्या थे। मेरा मानना है कि पादरी के रूप में, हम अपनी बयानबाजी पर भरोसा नहीं करते हैं। हम अनुनय के मानवीय शब्दों पर भरोसा नहीं करते हैं, पॉल ने कुरिन्थियों में कहा है।

लेकिन हमारे लिए यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हम अपना संदेश कैसे संप्रेषित करते हैं। कभी-कभी एक पादरी के रूप में, मुझे लगता है कि यह मेरे लिए यह सोचने में मदद करता है कि मैं उन पाँच लोगों के बारे में क्या जानता हूँ जिन्हें इस संदेश से कोई महत्वपूर्ण समस्या होगी जिसे मैं आज सुबह प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ। और अगर वे मेरे श्रोताओं में बैठे होते और मेरी बात सुन रहे होते, तो मैं उनसे क्या कहना चाहूँगा ताकि वे उस संदेश के बारे में सोचें जिसे मैं संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा हूँ? खैर, अमोस, जैसा कि वह यहाँ बोल रहा है और जैसा कि वह इजराइल के लोगों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास कर रहा है।

वह यहूदा से आया है। वह इस देश में एक अजनबी है। मैं इन लोगों से किस तरह से संवाद करूँ कि वे मेरी बात सुनें? मुझे लगता है कि राष्ट्रों की व्यवस्था और व्यवस्था, जैसा कि वह यहाँ बोल रहा है, बयानबाजी के शक्तिशाली उपयोग को दर्शाती है।

मेरे एक प्रोफेसर ने कहा कि अध्याय एक और दो में इस अंश में, आमोस, भविष्यवक्ता, लोगों के लिए हंस पकाता है, बिना उन्हें एहसास हुए कि वे बर्तन में हैं। और जिस तरह से वह ऐसा करता है वह यह है कि आमोस इजरायल को घेरने वाले राष्ट्रों के न्याय के बारे में बात करके शुरू करने जा रहा है। पहले छह न्याय भाषण राष्ट्र-राज्यों या छोटे राज्यों के बारे में हैं जो सीरिया-फिलिस्तीन के क्षेत्र में इजरायल के लोगों को घेरे हुए हैं।

सातवाँ संदेश जो संप्रेषित किया जाने वाला है, वह दक्षिणी राज्य यहूदा को दिया जाने वाला संदेश है। और मैं चाहता हूँ कि आप कल्पना करें कि इस्राएल के लोग, जब वे यह संदेश सुन रहे होंगे, तो उनकी प्रतिक्रिया और उनके विचार क्या रहे होंगे। जैसा कि भविष्यवक्ता सियोन से गरजने वाले और यरूशलेम से अपनी गड़गड़ाहट जारी करने वाले परमेश्वर के बारे में बात कर रहे थे, ताकि वे बाहर जाकर अपने आस-पास के लोगों का न्याय कर सकें, वे इस संदेश से पूरी तरह सहमत हुए होंगे।

जब भविष्यवक्ता सीरियाई, पलिशितियों, सोर के लोगों, एदोमियों, अम्मोनियों और मोआबियों के न्याय के बारे में बात कर रहा था, तो उन्होंने उसके संदेश की सराहना की होगी क्योंकि कई मायनों में इस्राएल का इन लोगों के साथ शत्रुता का एक लंबा इतिहास रहा है। इस्राएल और सीरिया के बीच लगातार संघर्ष होता रहा था, और वे भूमि और क्षेत्र के लिए आगे-पीछे लड़ते रहे थे। एदोम, एसाव के वंशज, इस्राएल के लोगों के उस समय से ही प्रतिद्वंद्वी थे जब से वे वादा किए गए देश में प्रवेश कर चुके थे।

और इसलिए, मैं कल्पना कर सकता हूँ कि जब आमोस आस-पास के देशों के न्याय के बारे में बात कर रहा होगा, तो उसे जबरदस्त स्वीकृति मिली होगी। इन संदेशों के लिए तालियाँ भी बज रही होंगी। उन विशेष रविवारों पर चढ़ावे की थाली भरी हुई थी।

और फिर, फिर से, बयानबाजी के बहुत ही रणनीतिक उपयोग को जारी रखते हुए, सातवाँ संदेश, जो हमें चरम संदेश लग सकता है, आमोस की पुस्तक में सात चक्र हैं। आमोस 5.21-24, सात चीजें जो इस्राएल के लोग करते हैं। अन्य स्थानों पर, सात अलग-अलग चीजों की ये सूचियाँ हैं।

सातवाँ संदेश चरमोत्कर्ष, अंतिम संदेश प्रतीत होता है। और वह संदेश संयोग से दक्षिणी राज्य यहूदा के बारे में है। यहूदा, आमोस अपने ही लोगों के खिलाफ बोल रहा है।

हम इस लड़के को बहुत पसंद करते हैं। शायद हमें उसे अपने पास रखना चाहिए। शायद वह अपना घर बदल कर हमेशा के लिए इज़राइली बन जाना चाहे।

इसलिए, उन्होंने इस संदेश की सराहना की होगी। ऐसा लगता है कि न्याय संबंधी भाषणों की यह श्रृंखला समाप्त हो गई है, लेकिन समस्या यह है कि एक आठवां संदेश है। और वह आठवां संदेश इस्राएल के लोगों से संबंधित है।

और अचानक, यह भविष्यवक्ता, जिसकी इस गरजने वाले और गरजने वाले ईश्वर के बारे में बोलने के लिए प्रशंसा की गई है जो अन्य लोगों का न्याय करता है, अब इस्राएल के पापों के बारे में बात करने जा रहा है। और एक तरह से, बम इन लोगों पर गिरता है। धर्मोपदेश का पंचलाइन बन गया है।

और हम पाएंगे कि जब न्याय उनके पक्ष में जाता है और जब वे लक्ष्य बन जाते हैं तो वे इसे स्वीकार नहीं करते हैं। मुझे लगता है कि चर्च के लोगों के लिए, जब हम अपने आस-पास की संस्कृति के पापों के बारे में बात करते हैं, तो हमें अक्सर बहुत प्रशंसा मिलती है। लेकिन जब हम चर्च के पापों की ओर मुड़ते हैं, चाहे वह हमारा भौतिकवाद हो, हमारा लालच हो, जिस तरह से हमने अपने विवाहों का व्यवहार किया है, उस तरह के... जब हम चर्च के भीतर के पापों, देने की कमी, सुसमाचार प्रचार की कमी और विश्व मिशनों के लिए जुनून की कमी के बारे में बात करना शुरू करते हैं, तो हमारे संदेशों को अक्सर बहुत कम अच्छी तरह से प्राप्त किया जाता है।

अगर हम दूसरे संप्रदायों के दलबदल और धर्मत्याग के बारे में बात करते हैं, तो लोग हमारे संदेशों की सराहना करेंगे। लेकिन जब हम अपने ही मण्डली में संघर्षों और मुद्दों और टूटे हुए रिश्तों के बारे में बात करना शुरू करते हैं, तो अक्सर लोग पवित्र परमेश्वर और उसके न्याय और उसकी अस्वीकृति के बारे में सुनने के लिए कम इच्छुक हो जाते हैं। मैं चर्च के बारे में सोचता हूँ, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सात कलीसियाओं के लिए यह कैसा था, जब उन्हें यीशु से एक व्यक्तिगत पत्र मिला और उन्होंने उस पर कैसे प्रतिक्रिया दी।

आमोस इस संदेश को इस्राएल के लोगों के लिए उतना ही व्यक्तिगत बनाने जा रहा है जितना कि वह उनके खिलाफ बोलता है। तो, इस सब में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, हाँ, परमेश्वर ही वह परमेश्वर है जो राष्ट्रों का न्याय करता है। सभी राष्ट्र उसके प्रति जवाबदेह हैं।

लेकिन यहूदा और इस्राएल को छूट नहीं मिलती। उन्हें सिर्फ इसलिए जेल से बाहर निकलने का कार्ड नहीं मिलता क्योंकि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। अब, फिर से, आइए इसके क्रम और प्रगति को देखें।

अध्याय 1 पद 3 में, भविष्यवक्ता जो करने जा रहा है, वह केवल अन्य लोगों के न्याय के बारे में बात करके इसे आगे बढ़ाना नहीं है। वह इस्राएल के लोगों को भी प्रभावी ढंग से घेरने जा रहा है। आखिरकार, उनके आस-पास के सभी लोगों को न्याय के लिए निशाना बनाया गया है, और जो कुछ बचा है वह यहूदा और इस्राएल है।

अध्याय 1, श्लोक 3, दमिश्क के तीन अपराधों के लिए। दमिश्क सीरिया, अरामी की राजधानी है। यह इज़राइल के उत्तर-पूर्व में है।

अध्याय 1, श्लोक 6, गाजा के तीन अपराधों के लिए प्रभु इस प्रकार कहते हैं। गाजा, वे पलिशती हैं। यह दक्षिण-पश्चिम में है।

इसलिए, हम उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर चलते हैं। अध्याय 1, श्लोक 9, सोर के तीन अपराधों के लिए। सोर, फोनीशियन और कनानियों के देश में उत्तर की ओर स्थित एक शक्तिशाली व्यापारिक शहर है।

इसलिए वह गाजा में रहने के बाद उत्तर की ओर वापस चला जाता है। अध्याय 1, पद 11, दक्षिण-पूर्व में एदोमियों के तीन अपराधों के लिए। अध्याय 1, पद 13, अम्मोनियों के तीन अपराधों के लिए, एदोमियों के पूर्व में लेकिन उससे भी आगे उत्तर में।

अध्याय 2, श्लोक 1 में, मोआब के तीन अपराधों के लिए। जब वह इस प्रक्रिया से गुज़रता है, तो वह मूल रूप से इस्राएल के लोगों को घेरता है, और फिर अंत में यहूदा है, और फिर इस्राएल है। ठीक है, अब लोगों के पापों के लिए और न्याय का आधार क्या है? हम समझते हैं कि परमेश्वर यहूदा और इस्राएल का न्याय क्यों और कैसे करने जा रहा है।

उन्होंने मूसा की वाचा की शर्तों का उल्लंघन किया है। उन्होंने दस आज्ञाओं का पालन नहीं किया है। उन्होंने प्रभु द्वारा दिए गए 613 नुस्खों का पालन नहीं किया है।

उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, दिमाग और ताकत से प्यार नहीं किया। उन्होंने अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्यार नहीं किया। लेकिन परमेश्वर इन दूसरे राष्ट्रों का न्याय किस आधार पर करता है? उसने उन्हें मूसा का कानून नहीं दिया है।

वह मूसा के कानून के आधार पर उनका न्याय नहीं करता क्योंकि परमेश्वर ने इन लोगों को यह नहीं बताया। लेकिन हम यहाँ जो समझते हैं वह यह है कि वह शब्द जो इन सभी राष्ट्रों के पाप का वर्णन करता है, शुरुआत में दमिश्क से लेकर इस चक्र के अंत में इस्राएल तक, यहाँ इस्तेमाल किया गया शब्द अपराध है, हिब्रू शब्द पाशा। उस शब्द का मूल विचार यह है कि यह विद्रोह को संदर्भित करता है।

यह इस विचार को दर्शाता है कि राष्ट्रों के बारे में परमेश्वर का न्याय उसी तरह वाचाबद्ध है जिस तरह इस्राएल और यहूदा के बारे में परमेश्वर का न्याय वाचाबद्ध है। उन्होंने परमेश्वर के साथ अपनी वाचा का उल्लंघन उसी तरह किया है जिस तरह इस्राएल और यहूदा ने, परमेश्वर के विशेष रूप से चुने हुए लोगों के रूप में, मूसा की वाचा का उल्लंघन किया था। हम इस शब्द पाशा का स्वाद और इसके उल्लंघन, विद्रोह और वाचा के उल्लंघन के विचार को पुराने नियम में कभी-कभी मानवीय क्षेत्र में देखते हैं।

2 राजा 3, श्लोक 5 में, यह कहा जा रहा है कि मोआब के राजा पाशा ने इस्राएल के राजा के खिलाफ विद्रोह किया। वह इस बिंदु तक एक जागीरदार था। मोआब का राजा उसके खिलाफ विद्रोह करता है, इस्राएल से अपनी स्वतंत्रता का दावा करना चाहता है, और इसलिए वह उसके खिलाफ विद्रोह करता है।

जैसा कि हम यहाँ पाशा शब्द को देखते हैं, जो पुराने नियम में पाप के प्रमुख शब्दों में से एक है, इसका विचार केवल सामान्य रूप से पाप नहीं है, बल्कि मुझे लगता है कि एक विशिष्ट तरीका है जिससे इन राष्ट्रों ने परमेश्वर के साथ वाचा का उल्लंघन किया है। इसलिए, हमें जो प्रश्न पूछना है, वह यह है कि यह वाचा क्या है? हम किस बारे में बात कर रहे हैं? यह आंशिक रूप से तब स्पष्ट हो जाता है जब हम उन अपराधों के प्रकारों को देखना शुरू करते हैं जिनके लिए इन राष्ट्रों को विशेष रूप से दोषी ठहराया गया है। मुझे लगता है कि यह विदेशी राष्ट्रों के खिलाफ कई निर्णय भाषणों के माध्यम से अपना काम करने जा रहा है।

यह भविष्यवाणी साहित्य की एक आम विशेषता है। इसका मतलब यह नहीं है कि भविष्यवक्ता सड़क यात्रा पर गए और इन विदेशी देशों में संदेश प्रचारित किए। वास्तव में, एकमात्र भविष्यवक्ता जिसे हम जानते हैं वह विशेष रूप से किसी दूसरे देश में उसके खिलाफ प्रचार करने और उसे उपदेश देने गया था, वह योना है।

यह एक अजीब बात थी। यह एक असामान्य बात थी, और यही कारण है कि मुझे लगता है कि योना ने इसका विरोध किया। लेकिन भविष्यवाणी के संदेशों का प्रचार करना, राष्ट्रों के बारे में परमेश्वर के न्याय के बारे में बात करना भविष्यवाणी साहित्य की एक सामान्य विशेषता है।

प्रमुख भविष्यवक्ताओं, यशायाह 13 से 23 में, हमें राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियों की एक श्रृंखला मिलती है। यिर्मयाह में, मसोरेटिक पाठ में, यिर्मयाह 46 से 51, राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ हैं। यहजेकेल की पुस्तक के मध्य, अध्याय 25 से 32, राष्ट्रों के न्याय से संबंधित है।

छोटे भविष्यवक्ताओं में, बारह की पुस्तक में, हमारे पास अंत में ये दो अध्याय हैं। बारह की पुस्तक में भी दो पुस्तकें हैं, नहूम की पुस्तक और ओबद्याह की पुस्तक। वे संदेश, वे पुस्तकें, विशेष रूप से विदेशी लोगों के बारे में परमेश्वर के न्याय से संबंधित हैं।

नहूम नीनवे और अशूरियों के न्याय के बारे में बात करता है, और ओबद्याह एदोमियों के न्याय के बारे में बात करने जा रहा है। हबक्कूक की पुस्तक, अध्याय 2 में, हमारे पास बेबीलोन के खिलाफ दुःख भरे भाषणों की एक श्रृंखला है। सपन्याह की पुस्तक, अध्याय 2 में, हमारे पास कुछ लोगों के खिलाफ न्याय के भाषणों की एक श्रृंखला है जो यहाँ आमोस की पुस्तक में भी पाए जाते हैं।

यह भविष्यवाणी के प्रचार का एक सामान्य हिस्सा है, लेकिन संदेश राष्ट्रों को लक्षित नहीं थे, बल्कि वे इस्राएल के लोगों को लक्षित कर रहे थे। यह उन्हें कुछ विशिष्ट चीजों की याद दिलाने के लिए था, इन लोगों के साथ वाचाएँ बनाने के लिए नहीं, यह विश्वास करने के लिए नहीं कि इन लोगों के देवता इस्राएल के प्रभु यहोवा से श्रेष्ठ थे, उनके उत्पीड़न और उनके कष्ट और उनके निर्वासन और उनकी सैन्य हार के बीच उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए कि परमेश्वर अंततः इस्राएल के दुश्मनों से निपटने और अपनी वाचा के वादों को पूरा करने जा रहा था। लेकिन ये राष्ट्र कौन से विशिष्ट अपराध करते हैं? आमोस में, आमोस इन राष्ट्रों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है जिन्हें परमेश्वर ने उनके वाचा उल्लंघन के लिए लक्षित किया है क्योंकि उन्होंने अन्य राष्ट्रों के प्रति जो अत्याचार किए हैं, वे हिंसा के दोषी हैं, और अक्सर यह तथ्य कि वे अन्य राष्ट्रों के साथ अपने

व्यवहार में ईमानदार नहीं रहे हैं, और उन्होंने अपने संधि दायित्वों या वाचा के वादों या जिम्मेदारियों को पूरा नहीं किया है जिनके अनुसार जीने के लिए उन्होंने खुद को प्रतिबद्ध किया था।

फिर से, हमें याद दिलाया जाता है कि ईश्वर दुनिया में होने वाली हर चीज़ पर शासन करता है, और वह पृथ्वी के राष्ट्रों को हिंसा और अत्याचारों के लिए जवाबदेह ठहराता है जो वे एक-दूसरे के खिलाफ़ करते हैं। जब हम 20वीं सदी के बारे में सोचते हैं और हम इस तथ्य के बारे में सोचते हैं कि युद्ध में 20 से 30 मिलियन लोग मारे गए होंगे, और हम दो विश्व युद्धों और होलोकॉस्ट और सोवियत संघ में कम्युनिस्ट सफ़ाई की भयावहता के बारे में सोचते हैं, तो यह संदेश आज भी हमारे लिए प्रासंगिक है। ईश्वर राष्ट्रों का न्याय करता है जब वे हिंसा करते हैं, जब वे अत्याचार करते हैं जब वे युद्ध अपराध करते हैं, और जब वे अपने लोगों या अन्य देशों के प्रति अमानवीयता के दोषी होते हैं, और ईश्वर यह देखता है और उन्हें जवाबदेह ठहराता है।

अध्याय 1, श्लोक 3 में, यहाँ अरामियों, सीरियाई लोगों, दमिश्क शहर का न्याय है। दमिश्क के तीन अपराधों के लिए, और चार के लिए, मैं उनकी सज़ा वापस नहीं लूँगा, क्योंकि उन्होंने गिलाद को लोहे के खलिहानों से रौंद दिया है। इनमें से हर एक भाषण में, जब यह परमेश्वर के न्याय और इन राष्ट्रों पर आने के बारे में बात करता है, तो हमारे पास तीन पापों के लिए, यहाँ तक कि चार के लिए भी यह परिचयात्मक सूत्र होगा।

हम उन दो काव्य पंक्तियों में उन संख्याओं, तीन और चार को जोड़ते हैं, और ऐसा लगता है कि यह फिर से एक पूर्ण और संपूर्ण सूची का विचार व्यक्त कर रहा है। जब हम नीतिवचन में इस उपकरण के उपयोग के तरीके को देखते हैं, तो हम अक्सर इस तरह के कथन पाते हैं, ऐसी छह चीज़ें हैं जिनसे प्रभु घृणा करता है, हाँ सात, और फिर अंतिम संख्या आम तौर पर नीतिवचन 6:16 के बाद की सूची की संख्या होती है। मेरे लिए तीन चीज़ें बहुत अद्भुत हैं, चार चीज़ें मेरी समझ से परे हैं। हम चार चीज़ों की एक सूची की अपेक्षा करते हैं।

हालाँकि, यहाँ जो होता है, तीन पापों के लिए, या तीन अपराधों के लिए, यहाँ तक कि चार के लिए भी, मैं सज़ा वापस नहीं लूँगा। सात अपराधों के बजाय, या चार की सूची के बजाय, आम तौर पर, इन सूचियों में हमारे पास जो होता है वह यह है कि केवल एक पाप का उल्लेख किया जाता है। इस सूची में शामिल कुछ राष्ट्रों के लिए, दो पाप सूचीबद्ध हैं।

मुझे लगता है कि यह उनकी पूरी और सम्पूर्ण दुष्टता के एक प्रमुख उदाहरण पर ध्यान केंद्रित करने जैसा है। दमिश्क का पाप यह है कि उन्होंने गिलाद को लोहे के खलिहानों से रौंदा है। गिलाद जॉर्डन के पूर्वी किनारे पर एक इस्राएली शहर था।

यह वह क्षेत्र था जिस पर सीरियाई और इस्राएलियों ने लड़ाई लड़ी थी। उस संघर्ष के दौरान किसी समय, दमिश्क के नेताओं और सेनाओं ने गिलियड के निवासियों के खिलाफ़ अत्याचार किए थे। जब यह कहा जाता है कि उन्होंने गिलियड को लोहे के थ्रेसिंग स्लेज से थ्रेस किया, तो थ्रेसिंग स्लेज एक लोहे का बोर्ड था जिसमें नुकीले चाकू या कील जैसे नुकीले खूंटे लगे होते थे।

उस तीखे औजार को गेहूँ या अनाज या जौ या जो कुछ भी काटा जा रहा था, उसके ऊपर घसीटा जाता था, ताकि अनाज को स्टॉक से अलग किया जा सके। जाहिर है, यहाँ जो हुआ है, उन्होंने इन थ्रेसिंग स्लेज का इस्तेमाल अनाज की कटाई के लिए नहीं, बल्कि लोगों को प्रताड़ित करने के लिए किया है। हम नहीं जानते कि यह शाब्दिक है या आलंकारिक, लेकिन यह दमिश्क और इज़राइल के बीच संघर्ष में हुए युद्ध की भयावहता का वर्णन कर रहा है।

परमेश्वर ने यह देखा है, और परमेश्वर दमिश्क को जवाबदेह ठहरा रहा है। उन्होंने इसके कारण परमेश्वर के साथ वाचा का उल्लंघन किया है। हम अध्याय 1, श्लोक 6 में गाजा के तीन अपराधों और चार, पलिशतियों के लिए जाते हैं; उन्होंने क्या किया है? श्लोक 6 के अंत में कहा गया है, क्योंकि उन्होंने एक पूरे लोगों को निर्वासित कर दिया है ताकि उन्हें एदोम को सौंप दिया जाए।

इसमें लोगों का ज़िक्र नहीं है। 2 इतिहास अध्याय 26 के आधार पर, उज्जियाह के समय में, यहूदा और पलिशतियों के बीच संघर्ष चल रहा है। यह उस संघर्ष का प्रतिबिंब हो सकता है जहाँ पलिशतियों ने इस्राएलियों या यहूदा के लोगों को युद्ध में बंदी बना लिया और फिर उन्हें निर्वासित कर दिया और उन्हें एदोमियों को गुलामी में बेच दिया।

परमेश्वर यह देखता है, और परमेश्वर कहता है, इसलिए मैं गाजा की दीवारों पर आग भेजूँगा। यह उसके गढ़ों को भस्म कर देगी। मैं अशदोद के निवासियों को और अश्कलोन के राजदण्डधारी को नष्ट कर दूँगा।

मैं एक्रोन के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊँगा, और इन सभी पलिशतियों के शहरों का उल्लेख करूँगा, और पलिशतियों के बचे हुए लोग नष्ट हो जाएंगे, प्रभु परमेश्वर की यही वाणी है। यहाँ दिलचस्प बात यह है कि प्रभु केवल राजा और नेताओं और सेनापतियों और सेनापतियों को ही इसके लिए जिम्मेदार नहीं ठहराते। परमेश्वर राष्ट्र को, जिसमें लोग भी शामिल हैं, उनके द्वारा किए गए अत्याचारों के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं।

पद 5 में, दमिश्क के न्याय के बारे में बात करते हुए, सीरिया के लोग कीर में निर्वासित हो जाएंगे, वह स्थान जहाँ से वे मूल रूप से आए थे, प्रभु कहते हैं। हम पद 9 में जाते हैं, तीसरा न्याय भाषण, सोर के तीन अपराधों और चार के लिए मैं दंड वापस नहीं लूँगा क्योंकि उन्होंने एक पूरे लोगों को एदोम के हवाले कर दिया। उन्होंने एदोमियों को बंदी बना लिया, और फिर, शायद इज़राइल या यहूदा के साथ संघर्ष के बारे में बात कर रहे थे, और उन्होंने भाईचारे की वाचा को याद नहीं किया।

हमारे पास सुलैमान के समय से ही कई उदाहरण हैं। हम 1 राजा 5, पद 12, 1 राजा 16 को देख सकते हैं, जहाँ सोर ने इस्राएल के लोगों के साथ कई वाचाएँ की हैं। अहाब ने इज़ेबेल से विवाह किया क्योंकि उसका पिता वहाँ का राजा था।

गठबंधन थे, वाचाएँ थीं, संधियाँ थीं। हालाँकि परमेश्वर इस बात से नाराज़ था कि इस्राएल ने इन गठबंधनों में प्रवेश किया था, परमेश्वर सोर को इस तथ्य के लिए उत्तरदायी ठहराता है कि उन्होंने अपनी वाचा के दायित्वों को पूरा नहीं किया। आज जब राष्ट्र संधियाँ और प्रतिबद्धताएँ बनाते हैं, तो परमेश्वर इसे अनदेखा कर रहा है।

परमेश्वर अपेक्षा करता है कि जब कोई राष्ट्र युद्ध में शामिल न होने, अन्य लोगों या अन्य राष्ट्रों को नुकसान न पहुँचाने और उनके संप्रभु क्षेत्रों पर अतिक्रमण न करने का वादा करता है, तो परमेश्वर उनका न्याय करेगा जब वे अपने किए गए वादों के अनुसार नहीं रहते हैं। अध्याय 1, श्लोक 11, एदोम के तीन अपराधों और चार के लिए, मैं दंड को वापस नहीं लूँगा क्योंकि उसने तलवार से अपने भाई का पीछा किया और सारी दया को त्याग दिया, और उसका क्रोध हमेशा के लिए फट गया, और उसने अपना क्रोध हमेशा बनाए रखा। तो यहाँ, हमारे पास एक से अधिक सूचीबद्ध पाप हैं।

मुझे लगता है कि एदोम और इस्राएल के बीच लगातार संघर्ष जो इस्राएल के इस देश में आने से पहले से ही चल रहा है, यहाँ भी परिलक्षित होता है। एदोम ने इस्राएल के साथ क्रोध और हिंसा का व्यवहार किया। उन्होंने इस तथ्य पर ध्यान देना नज़रअंदाज़ कर दिया कि वे इस्राएलियों के भाई थे।

इस्राएली, याकूब के वंशज। एदोमी, एसाव के वंशज। और क्योंकि उन्होंने दया त्याग दी थी, वे क्रोधित थे, उन्होंने अपना क्रोध बनाए रखा था, इसलिए परमेश्वर एदोमी पर अपना क्रोध उंडेलने जा रहा है।

और इसलिए, फिर से, हमारे पास न्याय के बारे में इस तरह की रूढ़िवादी भाषा है। मैं तेमान पर आग भेजूंगा, और यह बोस्रा के गढ़ों को भस्म कर देगा। इसलिए परमेश्वर देखता है कि एदोमियों ने क्या किया है, और वह उन्हें जवाबदेह ठहराने जा रहा है।

अम्मोनियों का उल्लेख अध्याय 1 श्लोक 13 में किया गया है, अम्मोनियों के तीन अपराध, चाहे चार के लिए भी मैं उनकी सज़ा वापस नहीं लूँगा। सुनिए उन्होंने क्या किया है। और यह एक भयानक वर्णन है लेकिन मुझे लगता है कि यह प्राचीन निकट पूर्व में युद्ध की वास्तविकता है।

क्योंकि उन्होंने गिलियड में गर्भवती महिलाओं को चीर दिया है, और याद रखें कि यह वही शहर है जिसे दमिश्क ने इन न्याय भाषणों की शुरुआती श्रृंखला में दुर्व्यवहार और यातना दी थी। उन्होंने गिलियड में गर्भवती महिलाओं को चीर दिया।

उन्होंने इन गैर-लड़ाकों को मार डाला। निर्दोष महिलाओं का कत्ल कर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप उनके गर्भ में पल रहे उनके छोटे बच्चे नष्ट हो गए।

और यही कारण है कि उन्होंने ऐसा किया। ताकि वे अपनी सीमा का विस्तार कर सकें। उन्होंने सबसे अमानवीय अपराधों में से एक किया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती, बस इसलिए कि वे अपने क्षेत्र का विस्तार कर सकें और अपनी समृद्धि बढ़ा सकें।

इसलिए, परमेश्वर कहता है, मैं अम्मोनियों के शहर रबाह की दीवार में आग लगाऊंगा, और यह युद्ध के दिन चिल्लाहट के साथ, बवंडर के दिन तूफान के साथ उसके गढ़ों को भस्म कर देगा। और उनका राजा, वह और उसके हाकिम एक साथ बंधुआ बन जाएगा। इसलिए हमने पहले देखा कि लोग बंधुआ बन जाएंगे।

परमेश्वर नेताओं को विशेष रूप से उत्तरदायी ठहराता है। और जब मैं यह पढ़ता हूँ तो यह जानकर मुझे सुकून मिलता है कि जिस दुनिया में हम रहते हैं, जहाँ ये भयानक अत्याचार, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और आज जो कुछ भी हो रहा है, परमेश्वर उन चीजों को देखता है, और परमेश्वर अंततः पूरी पृथ्वी का न्यायाधीश है जो चीजों को सही करेगा। अब्राहम कहता है, क्या पृथ्वी का न्यायाधीश सही काम नहीं करेगा? जैसा कि वह अपने दिनों में चल रही स्थिति के बारे में सोच रहा है।

और मुझे लगता है कि आमोस यह जानने के लिए प्रोत्साहन देता है कि जब परमेश्वर राष्ट्रों के साथ व्यवहार करता है, इतिहास और परलोक दोनों में, परमेश्वर चीजों को सही करने जा रहा है। परमेश्वर इतिहास के भीतर राष्ट्रों का न्याय करता है, और समय के अंत में एक अंतिम निर्णय भी होता है जहाँ परमेश्वर सभी राष्ट्रों, सभी लोगों, सभी राजाओं, सभी नेताओं, उन सभी को जो सत्ता में रहे हैं, उन सभी को जो इसके लिए जिम्मेदार हैं, परमेश्वर उन सभी को उन प्रकार की चीजों के लिए जवाबदेह ठहराता है। अध्याय 2, श्लोक 1, इससे पहले कि हम यहूदा और इस्राएल में पहुँचें, मोआब के तीन अपराधों और चार के लिए, मैं सजा को वापस नहीं लूँगा क्योंकि उसने एदोम के राजा की हड्डियों को जलाकर चूना बना दिया था।

और यहाँ हमारे पास एक संघर्ष है और आप कल्पना कर सकते हैं कि ये छोटे राष्ट्र हमेशा क्षेत्र, सीमाओं, भूमि के इस टुकड़े या संपत्ति के इस टुकड़े या इस जलमार्ग और इस तरह की चीजों पर लड़ते रहते हैं। मोआब के तीन अपराधों के लिए, उसने एदोम के राजा की हड्डियों को जलाकर चूना बना दिया। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे पास पहला स्पष्ट उदाहरण है जहाँ यह केवल ऐसा कुछ नहीं है जो इन देशों में से किसी ने इज़राइल के लोगों के साथ किया है।

यह अब एक उदाहरण है जहाँ दो लोग हैं जिनमें इस्राएल बिल्कुल भी शामिल नहीं है, मोआब और एदोम, और हिंसा और जिस तरह से उन्होंने अपने दुश्मन के राजा के अवशेषों को अपमानित किया है और उनका अपमान भी किया है, वह अंततः उन्हें दंड के लिए उत्तरदायी बनाता है। इसलिए, हमने इस तथ्य के बारे में बात की है कि इन राष्ट्रों ने प्रभु के विरुद्ध किसी प्रकार का वाचा उल्लंघन किया है। जब हम इस्राएलियों के बारे में सोचते हैं, तो हम कह सकते हैं, ठीक है, यह केवल अब्राहमिक वाचा का कार्यान्वयन है।

भगवान ने कहा कि जो लोग तुम्हें आशीर्वाद देंगे, मैं उन्हें आशीर्वाद दूँगा। जो लोग तुम्हें शाप देंगे, मैं उन्हें शाप दूँगा। और इसलिए इन देशों को इसके लिए जवाबदेह ठहराया जाता है।

यह बात यहाँ भी लागू हो सकती है। आखिरकार, मुझे लगता है कि जिस वाचा को ध्यान में रखा जा रहा है और क्यों ये राष्ट्र जो मूसा की वाचा के अधीन नहीं हैं, उन्हें यहोवा के खिलाफ़ पेशा करने के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि उन्होंने नूह की वाचा की शर्तों का उल्लंघन किया है जो बाढ़ के समय के ठीक बाद पूरी मानवता के साथ स्थापित की गई थी। याद रखें, उस वाचा में और पुराने नियम में जिस तरह से वाचाएँ स्थापित की गई हैं, वाचाओं में हमेशा परमेश्वर की ओर से वादे होते हैं, लेकिन उनमें कुछ प्रकार की शर्त या शर्त भी होती है।

नूह की वाचा का वादा यह है कि परमेश्वर फिर कभी जलप्रलय द्वारा पृथ्वी का न्याय नहीं करेगा। वह पृथ्वी को उस तरह नष्ट नहीं करेगा जैसा उसने नूह के दिनों में किया था। और यह महत्वपूर्ण है।

परमेश्वर को अपनी उद्धार योजना को पूरा करने के लिए पृथ्वी पर बने रहना होगा। हालाँकि, यह दायित्व था कि इस बिंदु से आगे मानवता, यह सुनिश्चित करने के तरीके के रूप में कि बाढ़ का न्याय फिर से न हो, उन्हें उस हिंसा को रोकना था जिसने पहली बार उस बाढ़ का कारण बना था। यहाँ मानव सरकार स्थापित है।

और परमेश्वर ने नूह से कहा, जो कोई मनुष्य का खून बहाएगा, उसका खून मनुष्य ही बहाएगा। और यह एक शाश्वत प्रतिबद्धता है कि मानवता हिंसा और रक्तपात को रोकने के लिए जिम्मेदार है। इसका कारण यह है कि मनुष्य को परमेश्वर की छवि में बनाया गया है।

और इसलिए मनुष्य को इन अपराधों का सम्मान करना चाहिए जो उन्होंने किए हैं, जैसे, कि दमिश्क के लोगों ने गिलाद के निवासियों को लोहे के स्लेज से पीटा, जिस तरह से लोगों के एक अन्य समूह ने बेचा, और इनमें से कई लोगों ने इस्राएलियों या अन्य लोगों को गुलामी में, निर्वासन में बेच दिया, जिस तरह से उन्होंने शांति का अभ्यास करने के लिए किए गए अंतर्राष्ट्रीय संधियों और वाचाओं का उल्लंघन किया, जिस तरह से अम्मोनियों ने गिलाद की गर्भवती महिलाओं को कोड़े मारे, जिस तरह से मोआबियों ने राजा की हड्डियों को जलाकर चूना बनाया, उन्होंने परमेश्वर द्वारा उत्पत्ति 9, श्लोक 5 और 6 में निर्धारित नियमों का उल्लंघन किया। इसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर का न्याय इस्राएल के चारों ओर के राष्ट्रों पर पड़ने वाला था। ठीक है। और इसलिए, यहाँ जो कुछ भी है वह इतिहास के पाठ से कहीं अधिक है।

और हमने आज के लोगों के लिए इसकी प्रासंगिकता के बारे में बात की है। यह सिर्फ एक वाचा नहीं है जो 8वीं सदी में सीरिया, फिलिस्तीन की भूमि में इज़राइल और यहूदा के आसपास के राष्ट्रों पर लागू होती थी। यह एक वाचा है।

यह एक दायित्व है जो पूरी मानवता पर डाला गया है। और इसलिए, परमेश्वर इस वाचा के आधार पर पूरे इतिहास में राष्ट्रों का न्याय करता रहा है। और मुझे लगता है, हाल के इतिहास को देखते हुए, मेरा मानना है कि परमेश्वर ने नाजी जर्मनी को उनके द्वारा किए गए अत्याचारों के लिए दंडित किया।

मेरा मानना है कि भगवान ने सोवियत साम्राज्य का न्याय किया क्योंकि यह एक हिंसक, दुष्ट साम्राज्य था। लेकिन अपने देश के बारे में सोचते हुए, जब हमारे पास एक ऐसा देश है जो गर्भपात करता है और हर साल दस लाख बच्चों की हत्या करता है, तो अंततः, उस तरह की हिंसा के लिए एक हिसाब है। और अंततः, भगवान सभी देशों को जवाबदेह ठहराते हैं।

और इसलिए, परमेश्वर आज इतिहास में राष्ट्रों का न्याय उसी तरह करता है जैसे उसने पुराने नियम में इस्राएल और यहूदा के दिनों में किया था। यह सिर्फ पुराने नियम की बात नहीं है। यह मानवता के प्रति परमेश्वर की स्थायी प्रतिबद्धता है।

और वास्तव में, यशायाह की पुस्तक में परमेश्वर के अंतिम न्याय के बारे में बताया गया है, यशायाह की पुस्तक के एक भाग में जिसे छोटा सर्वनाश कहा जाता है, जो अंततः इस बारे में बात करता है कि परमेश्वर का न्याय पूरी पृथ्वी पर पड़ने वाला है। और मेरा मतलब है, यह एक विनाशकारी न्याय होने वाला है। यह केवल दमिश्क या एदोम या मोआब या किसी एक विशेष राष्ट्र पर नहीं पड़ने वाला है।

यह पूरी पृथ्वी पर पड़ने वाला है, और पृथ्वी इस न्याय के तहत नशे में धुत व्यक्ति की तरह लड़खड़ाएगी और लड़खड़ाएगी। परमेश्वर यह न्याय क्यों लाने जा रहा है? यशायाह 24, पद 1 से 5, हमारे लिए यह समझाता है। और यह कहता है, पद 5: पृथ्वी अपने निवासियों के अधीन अपवित्र हो गई है क्योंकि उन्होंने नियमों का उल्लंघन किया है।

उन्होंने नियमों का उल्लंघन किया है। उन्होंने सनातन वाचा को तोड़ा है। इसलिए, एक अभिशाप पृथ्वी को निगल जाता है, और इसके निवासी अपने अपराध के लिए पीड़ित होते हैं।

इसलिए, पृथ्वी के निवासी झुलस गए हैं, और कुछ ही लोग बचे हैं। यह एक ऐसा न्याय है जो पृथ्वी पर आने वाला है। ऐसा क्यों होता है? और यशायाह कहता है कि पृथ्वी पर यह न्याय इसलिए आएगा क्योंकि उन्होंने सनातन वाचा का उल्लंघन किया है।

जब हम अनन्त वाचा के बारे में बात कर रहे हैं, तो हम किस बारे में बात कर रहे हैं? फिर से, हम मूसा के कानून के बारे में बात नहीं कर रहे हैं क्योंकि यह एक वाचा है जो विशेष रूप से इस्राएल के लोगों के साथ स्थापित की गई है। जब यह कहा जाता है कि उन्होंने कानूनों का उल्लंघन किया है, तो हम दस आज्ञाओं के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। मेरा मानना है कि हम नूह की वाचा के प्रावधानों के बारे में बात कर रहे हैं जिनका पूरे इतिहास में उल्लंघन किया गया है।

अंततः, रक्त मीटर अपने पूरे माप पर पहुंचने वाला है और भगवान कहेंगे, बहुत हो गया। भगवान ने इस्राएल के लोगों से कहा कि उन्हें यह सुनिश्चित करना था कि वे हत्या और हत्या के मामलों में न्याय करें और न्याय करें क्योंकि निर्दोष पीड़ितों का खून, जो भूमि पर रहते थे, न्याय के लिए भगवान से रोएंगे। कल्पना कीजिए कि यह लाखों-करोड़ों गुना बढ़ गया है, क्योंकि सभी निर्दोषों का खून, हिंसा जो मनुष्यों ने एक-दूसरे पर की है।

हमारे देश में फिर से जिम्मेदारी, अपराधबोध की कल्पना करें, न कि केवल हत्याएं और वहां होने वाली घटनाएं, एक साल में दस लाख गर्भपात। आखिरकार, सभी प्रकार की हिंसा और रक्तपात के लिए, ईश्वर को जवाबदेह ठहराया जाता है। हम यशायाह में कैसे जानते हैं कि यह विशेष रूप से और विशेष रूप से वही है जिस पर यशायाह ध्यान केंद्रित कर रहा है? खैर, वह इसके बारे में एक शाश्वत वाचा के रूप में बात करता है।

यह, फिर से, नूह के समय में वापस जाएगा। लेकिन यशायाह 26-21 में, मुझे लगता है कि हमें इस बारे में अधिक विशिष्ट विचार मिलता है कि हम यहाँ किस विशिष्ट वाचा के बारे में बात कर रहे हैं। यशायाह 26-21 यह कहता है: क्योंकि देखो, प्रभु पृथ्वी के निवासियों को उनके अधर्म के लिए दंडित करने के लिए अपने स्थान से बाहर आ रहा है।

और धरती उस खून को प्रकट करेगी जो उस पर बहाया गया है और अब अपने मारे गए लोगों को नहीं छिपाएगी। परमेश्वर सारे खून-खराबे, सारी हिंसा, सारे अत्याचारों को जानता है जो पूरे इतिहास में किए गए हैं। धरती यह सब प्रकट करने जा रही है और परमेश्वर अंततः उसके कारण अपना न्याय करने जा रहा है।

मुझे लगता है कि 12 की पुस्तक में, आमोस नूह की वाचा के धर्मशास्त्र को प्रतिबिंबित कर रहा है, कि परमेश्वर इन राष्ट्रों का न्याय करने जा रहा है क्योंकि उन्होंने जो भयानक काम किए हैं और जो रक्तपात और अत्याचार किए हैं। लेकिन हम हबक्कूक की पुस्तक में भी यही बात देखते हैं। बेबीलोन पर एक न्याय होने जा रहा है, और परमेश्वर अंततः, इस्राएल और यहूदा पर अपना न्याय करने के लिए उनका उपयोग करने के बाद, परमेश्वर बेबीलोनियों का न्याय करने जा रहा है।

क्यों? क्योंकि वे एक ऐसा साम्राज्य थे जो सैन्य वर्चस्व, हिंसा, आक्रमण और रक्तपात पर बना था। और हबक्कूक यह कहता है: हाय उस पर जो खून से शहर बनाता है और अधर्म पर एक शहर की स्थापना करता है। देखो, यह सेनाओं के यहोवा की ओर से नहीं है कि लोग केवल आग के लिए परिश्रम करें और राष्ट्र व्यर्थ में खुद को थका दें।

बेबीलोन एक ऐसा साम्राज्य है जो खून पर बना है। अंततः, परमेश्वर को इसका लेखा-जोखा देना होगा, और उस साम्राज्य को गिरा दिया जाएगा। नहूम, अश्शूरियों के न्याय के बारे में बात कर रहे हैं, और हमने अपने एक वीडियो में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से बात की कि कैसे अश्शूर को विशेष रूप से हिंसक और आक्रामक लोगों के रूप में जाना जाता था, जिसमें लाठी पर लटके हुए पीड़ितों और क्षत-विक्षत शवों और सिर कटे सैनिकों और यातना और इस तरह की सभी चीजें होती थीं।

जब इतिहास में नीनवे पर परमेश्वर का न्याय आता है, तो अध्याय 3, पद 1 में यह लिखा है: हाय उस खूनी शहर पर, जो झूठ और लूट से भरा हुआ है और जिसके शिकार का कोई अंत नहीं है। इसलिए, उन्होंने खून-खराबा किया है, उन्होंने अत्याचार किए हैं, और नहूम ने जो दर्शाया है वह एक दुश्मन सेना है जो उनके साथ बिल्कुल वैसा ही करने जा रही है, और सज़ा उनके अपराध के अनुरूप होगी क्योंकि परमेश्वर उन्हें जवाबदेह ठहराता है। इसलिए अध्याय 1 और 2 में राष्ट्रों के बारे में परमेश्वर के न्याय का यही आधार है। जब हम यह देखते हैं कि आमोस यहूदा और इस्राएल के न्याय के बारे में क्या कहने जा रहा है, तो हम देखते हैं कि न्याय का आधार, यहाँ एक अलग दृष्टिकोण है।

आमोस के श्रोतागण में उपस्थित सभी लोगों ने कहा होगा, हम पूरी तरह से, हम आपके द्वारा कही गई बातों से पूरी तरह सहमत हैं। ये राष्ट्र परमेश्वर के न्याय के पात्र हैं। वे परमेश्वर की प्रशंसा करते, सिंह की तरह दहाड़ते और तूफान की तरह गरजते।

लेकिन सातवें भाषण को याद रखें, और फिर से, उत्तरी राज्य के लोगों ने इसे स्वीकार किया होगा, यहूदा के तीन अपराधों और चार के लिए मैं उनकी सज़ा वापस नहीं लूँगा क्योंकि उन्होंने यहोवा के कानून को अस्वीकार कर दिया है और उन्होंने उसकी विधियों को नहीं रखा है। तो अब, यहूदा का न्याय इस तथ्य पर आधारित है कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन किया है, और

मुझे लगता है कि उस निर्णय का आधार मूसा के कानून का उनका उल्लंघन है। उन्होंने उसकी विधियों का पालन नहीं किया है; उनके झूठ ने उन्हें भटका दिया है, जिनके पीछे उनके पूर्वज चले हैं, इसलिए मैं यहूदा पर आग भेजूँगा, और यह यरूशलेम के गढ़ों को भस्म कर देगा।

ठीक है, यह बहुत बढ़िया है। सातवाँ संदेश, संदेश समाप्त हो गया है, लेकिन आठवाँ संदेश जो लोगों को इतना पसंद नहीं आया होगा, वह यह है कि परमेश्वर कहता है, अब इसे सुनो: इस्राएल के तीन अपराधों और चार के लिए, मैं दण्ड वापस नहीं लूँगा। दिलचस्प बात यह है कि जब प्रभु इस्राएल के न्याय की ओर मुड़ते हैं, तो हमें एक पाप की सूची देने के बजाय, या शायद उनके द्वारा किए गए दो पापों की सूची देने के बजाय, इस्राएल के पापों की एक लंबी सूची होती है।

वे धर्मी लोगों को चाँदी के लिए, ज़रूरतमंदों को एक जोड़ी चप्पल के लिए बेचते हैं, वे गरीबों के सिर को रौंदते हैं, वे पीड़ितों का मार्ग बदल देते हैं, एक आदमी और उसका पिता एक ही लड़की के पास जाते हैं, वे हर वेदी के पास गिरवी रखे कपड़ों पर लेट जाते हैं, और अपने परमेश्वर के घर में, वे उन लोगों की शराब पीते हैं जिन पर जुर्माना लगाया गया है। पापों की सबसे लंबी सूची इस्राएल में पाई जाती है। इस्राएल ने सोचा होगा, परमेश्वर के लोगों के रूप में, हम इस निर्णय से मुक्त हैं; हम उन मूर्तिपूजकों से बेहतर हैं जो उन अन्य देवताओं की पूजा करते हैं।

परमेश्वर इस्राएल से कहता है, आमोस के माध्यम से, तुम उन लोगों के प्रति अधिक जवाबदेह हो जिन्हें बहुत कुछ दिया गया है; बहुत कुछ अपेक्षित है। परमेश्वर ने तुम्हें अपना नियम दिया है; तुमने उसका पालन नहीं किया, और अंततः तुम जवाबदेह ठहराए जाओगे। आमोस 1-2 में हमें याद दिलाया गया है कि परमेश्वर एक दहाड़ता हुआ सिंह है; परमेश्वर एक गरजता हुआ तूफान है।

हम इसे आमोस की पूरी किताब में देखेंगे। यह न्याय राष्ट्रों पर नूह की वाचा के उल्लंघन के कारण आएगा। परमेश्वर का न्याय यहूदा और इस्राएल पर आएगा क्योंकि उन्होंने मूसा की वाचा का उल्लंघन किया है।

वे अपने पूरे दिल से परमेश्वर से प्रेम करने में विफल रहे हैं। वे अपने पड़ोसियों से खुद की तरह प्रेम करने में विफल रहे हैं।

यह डॉ. गैरी येट्स द्वारा लघु भविष्यद्वक्ताओं पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 8 है, राष्ट्रों पर न्याय।